thearyasamaj.org

जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ५६ अंक - १०
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

आश्विन-कार्तिक : सम्वत् २०७१ वि० अक्टूबर, २०१४

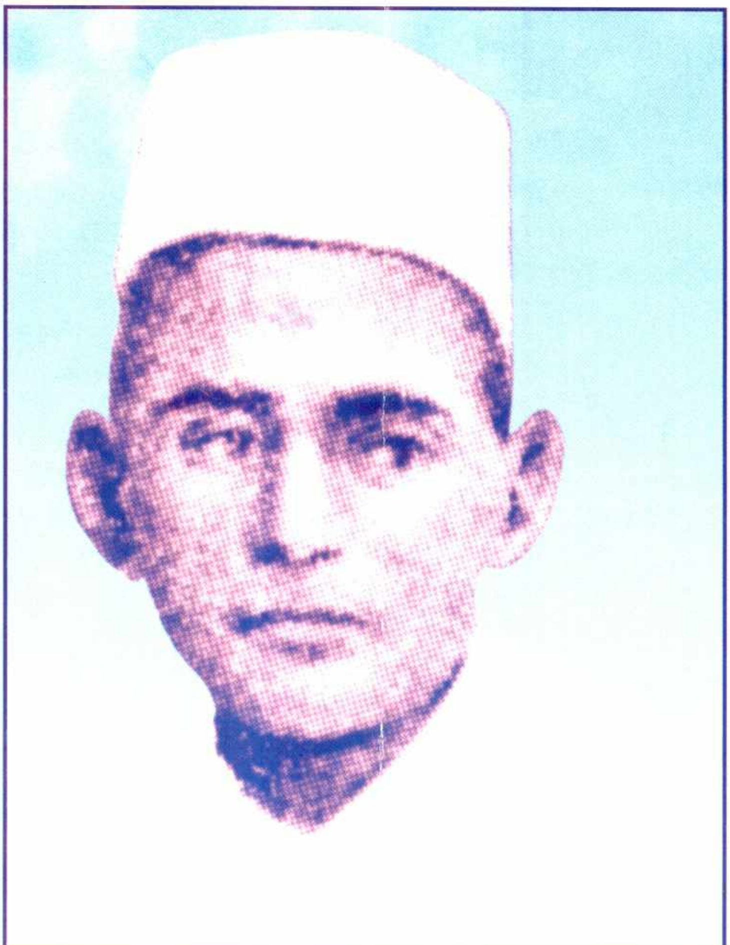

श्री राधामोहन गोकुल

thearyasamaj.org

श्री राधामोहन गोकुल

श्री राधामोहन गोकुल का नाम कलकत्ता के आर्यसमाज जगत् में एक सम्पादक के रूप में उजागर हुआ था । श्री राधामोहनजी लाल गोपालगंज, इलाहाबाद (उ०प्र०) के थे । आपका जन्म यही लाल गोपालगंज में सन् १८६५ ई० में हुआ था । आपके पिताजी का नाम श्री गोकुलचन्द था । श्री राधामोहनजी ने फारसी और अंग्रेजी का अध्ययन किया था । स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की ओर आपका झुकाव कैसे हुआ, यह तो ज्ञात नहीं है किन्तु आप कट्टर आर्यसमाजी निष्ठा के व्यक्ति थे, इसमें भी कोई सन्देह नहीं है । जीविका उपार्जन के सिलसिले में सन् १९०४ ई० में श्री राधामोहनजी कलकत्ता आये थे । यहाँ कुछ क्रान्तिकारी समाज सुधारक मारवाड़ी युवकों से आपका सम्पर्क हुआ । क्रान्ति के भाव यहाँ अधिक उजागर हो गये । श्री राधामोहनजी न केवल आर्यसमाजी निष्ठा के समाज सुधारक थे अपितु स्वाधीनता प्रेमी और स्वाधीनता संघर्ष को प्रेरित करने वाले युवक थे । जब लाला लाजपत राय को देशनिकाला का दण्ड दिया गया तो राधामोहन गोकुलजी ने **'देशभक्त लाजपत'** नाम की पुस्तक लिखी । श्री राधामोहनजी ने इटली के क्रान्तिकारी देशभक्तों मैजिनी और गैरवाल्डी के जीवन चरित्र भी लिखे । श्री राधामोहनजी की अभिरुचि लेखन-कला की ओर थी । आपने कई पुस्तकें लिखी । गुरुगोविन्द सिंह, कलिदर्शन, देश का धन इत्यादि कुछ अन्य पुस्तकों की सूचना भी मिलती है ।

श्री राधामोहन गोकुलजी कलकत्ता के आर्यसमाज जगत् में इसलिए भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं कि एक समय जब आर्य समाज का और आर्यसमाजी निष्ठा का बड़ी उग्रता और कठोरता से विरोध हो रहा था, उस समय श्री राधामोहन गोकुलजी ने आर्यसमाज की ओर से उन सारे विरोधों का डटकर सामना किया था और यह कहने में कुछ हिचक नहीं है कि राधामोहन जी को ईट का जवाब पत्थर से देने में कोई संकोच न था ।

घटना का तुक यों बना । कलकत्ता के प्रसिद्ध आर्यसमाजी मारवाड़ी पोद्दार परिवार में जयनारायण जी पोद्दार के मंझले पुत्र श्री दीपचन्दजी पोद्दार की पत्नी का देहान्त हो गया था । श्री जयनारायण जी और उनका समस्त परिवार कट्टर आर्यसमाजी निष्ठा के थे । अतः इस दिवंगत महिला का अन्त्येष्टि-संस्कार स्वामी दयानन्द की संस्कार विधि के अनुसार किया गया । शव का शिर उत्तर की ओर और चिता पर भी सामग्री की आहुतियाँ, यह सब कुछ किया गया । यद्यपि इस अन्त्येष्टि संस्कार के करवाने के लिए श्री जयनारायण जी ने बड़ाबाजार के सुप्रसिद्ध वैद्य पं० रामदयाल जी शर्मा सिहानेवाले को बुलाया था । वैद्य जी विशुद्ध कट्टर सनातनधर्मी विद्वान् थे, किन्तु सत्य के प्रतिपालक थे और कोई सत्यनिष्ठ सनातन धर्मी विद्वान् अन्त्येष्टि संस्कार को धर्म विरुद्ध नही कह सकता ।

किन्तु बड़ाबाजार में विशेषरूप से मारवाड़ी वर्ग में ऐसे लोगों की कमी न थी जो आर्यसमाजी होने के कारण जयनारायणजी से डाह ही नहीं करते थे, भयानक विरोध तक करने में संकोच नहीं करते थे । इस प्रसंग पर जयनारायण जी को लोगों ने बहिष्कृत कर दिया । यह संवत् १९६१ विक्रमी, सन् १९०७ ई० की घटना है । विरोधियों की उग्रता इतनी बढ़ गई कि उन्होंने मुरादाबाद से पं० ज्वाला प्रसादजी मिश्र और प्रसिद्ध आर्यसमाज विरोधी पं० भीमसेन जी शर्मा इत्यादि कई उच्च कोटि के विद्वानों को बुलाया और यह पण्डितों की मण्डली प्रसिद्ध सनातनधर्मी शिक्षा-संस्था विशुद्धानन्द विद्यालय में महीनों जमी रही । श्री जयनारायणजी पोद्दार और पं० रामदयालजी वैद्य के विरुद्ध बड़ा बवण्डर खड़ा किया गया । उस समय आर्य समाज का विरोध करने के लिए सनातन

([illegible])

thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५५ अंक — १०

आश्विन-कार्तिक—२०७१ वि०
दयानन्दाब्द १९०
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४

अक्टूबर— २०१४

मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

सम्पादक :
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय,
एम. ए.

सह सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेश राज उपाध्याय

इस अंक की प्रस्तुति

१.	इस अंक की प्रस्तुति		३
२.	मातृभूमि हमें समृद्ध करे		४
३.	महर्षि वचन सुधा-३७	-प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७
४.	वैदिक धर्म तथा मोक्ष	-श्री कामता प्रसाद सिंह	८
५.	विश्व संगठन के वैदिक आधार-मैत्री और समता	-प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१२
६.	राष्ट्रीय पर्व बनाम आर्य समाज	-श्री नरसिंह सोलंकी	१५
७.	स्व० लालबहादुर शास्त्री-एक श्रद्धांजलि	-प्रो० ओमकुमार आर्य	१७
८.	अध्यापक के लिए कुछ व्रतों का पालन आवश्यक	-डॉ० अशोक आर्य	१८
९.	२०१४ के चुनाव में आर्य समाज का स्थान	-प्रो० डॉ० चंद्रशेखर लोखंडे	२१
१०.	पितृपक्ष-श्राद्ध तर्पण	-पं० वेदभानु	२३
११.	आस्था के दलदल में	-श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य	२५

आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६, दूरभाष : २२४१-३४३१

email : aryasamajkolkata@gmail.com

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा।

thearyasamaj.org

मातृभूमि हमें समृद्ध करे

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी ।
वैश्वानरं विभ्रती भूमिरग्निमिन्द्र ऋषभा द्रविणे नो दधातु ।।

अथर्व० १२-१-६

शब्दार्थ :-

विश्वंभरा	=	विश्व का, सबका भरण पोषण करने वाली	दधातु	=	धारण-स्थापन करे
			वैश्वानरं	=	मनुष्य मात्र को
वसुधानी	=	जीवन की आवश्यकताओं को धारण करनेवाली	विभ्रती	=	भरण पोषण करनेवाली
			भूमिः	=	मातृभूमि
प्रतिष्ठा	=	सबको प्रतिष्ठित करनेवाली	अग्निम्	=	अग्नि को
हिरण्यवक्षा	=	रत्नगर्भा, खनिजवाली	इन्द्र ऋषभा	=	श्रेष्ठ ऐश्वर्यवाली
जगतः	=	प्रगति, संसार का	द्रविणे	=	धन में
निवेशनी	=	आश्रय देनेवाली	नः	=	हमें, देश को

भावार्थ :- मातृभूमि की विशेषताएं निम्न प्रकार की हैं -
१. सबका भरणपोषण करने वाली, २. सभी निवासियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करनेवाली, ३. सबकी प्रतिष्ठा करनेवाली, ४. खनिज पदार्थों से भरपूर, ५. प्रगति को सहारा देने वाली, ६. वैश्वानर का पालन करने वाली । ऐश्वर्यशालिनी मातृभमि हममें अग्नि-तेज धारण करावे । मातृभूमि देश को धनधान्य से समृद्ध करे ।

विचार विन्दु :

१. **मातृभूमि के प्रति स्वाभाविक ममत्व ।**
२. **हिरण्यवक्षा का स्वरूप-सीने में हिरण्य, तेज-खनिज धारण ।**
३. **वसुधानी का स्वरूप, वासयन्ति तस्माद् वसवः ।**
४. **प्रगति केवल भौतिक नहीं, हिरण्य केवल स्वर्ण नहीं, ऐश्वर्य और तेज भी ।**
५. **इन्द्रऋषभा और द्रविण का बहु आयामी स्वरूप ।**

व्याख्या

परमेश्वर ने जैसे आकाश में कोई विभाजन देश या राष्ट्र का नहीं किया है, वैसे धरती पर भी प्रभु ने किसी देश की सीमा नहीं बनाई है । भूमि सारे विश्व का भरण-पोषण करती है। विश्वनर सम्पूर्ण विश्व के लिए समान हैं । प्रस्तुत मंत्र की व्याख्या आज के सन्दर्भ में है । आज

thearyasamaj.org
के युग में मातृभूमियों की सीमाएं वहां के निवासियों ने अलग - अलग बना ली हैं ।

प्रस्तुत मंत्र में मातृभूमि से प्रार्थना की गई है कि मातृभूमि हमें श्रेष्ठ ऐश्वर्यशाली धन-धान्य से सम्पन्न और तेजस्वी बना दे । मातृभूमि के प्रति एक प्रकार का लगाव और स्नेह नैसर्गिक है। शीत-प्रदेशों के पक्षी और जलचर प्रचण्ड शीत के समय उष्ण-देशों में आते हैं। किन्तु मौसम के अनुकूल होते ही वे अपनी मातृभूमि को लौट जाते हैं । मातृभूमि के प्रति प्यार मानवता का लक्षण है । मैथिलीशरण जी गुप्त ने सच ही कहा है —

'जिसको न निज भाषा तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं नरपशु निरा है और मृतक समान है ।'

राष्ट्र को, राष्ट्र के व्यक्तियों को, अपने देश, अपनी भाषा, अपनी वेश-भूषा, अपने खान-पान पर गर्व होना चाहिए । मंत्र में मातृभूमि को विश्वम्भरा कहा गया है । विश्वम्भरा का अर्थ है - सब का भरण-पोषण करने वाली । भरण-पोषण के दो रूप हैं -

(१) भौतिक : अन्न, वस्त्र, आवास, औषधि, भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भरण-पोषण के भौतिक स्वरूप हैं । प्रत्येक राष्ट्र को भौतिक आवश्यकताओं की दृष्टि से आत्म-निर्भर होना चाहिए । जो देश आत्मनिर्भर नहीं होगा वह सम्मान से जी नहीं सकेगा । उसके स्वाभिमान की रक्षा न हो सकेगी ।

(२) अभौतिक : अभौतिक तत्वों में साहित्य, दर्शन, विज्ञान, मनुष्य और राष्ट्र के चारित्रिक आधार हैं । आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ठीक ही कहा है कि कैसी भी सुन्दर भाषा हो, यदि उसमें साहित्य, दर्शन, विज्ञान आदि नहीं है तो वह भाषा सुन्दर होकर भी रूपवती भिखारिन है । सच ही -'मुर्दा है वह राष्ट्र जहां साहित्य नहीं है ।' मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता । खाना, पीना, रहना तो पशु-पक्षियों को भी चाहिए । राष्ट्र को तो राष्ट्र का स्वाभिमान भी चाहिए।

मंत्र में मातृभूमि को वसुधानी कहा गया है । वस्तुतः बसने के लिए, रहने के लिए, जीने के लिए जो भी आवश्यक है वे सब वसु हैं । वसु हैं वासयन्ति तस्माद् वसवः । जीवन धारण करने के लिए अन्न, वस्त्र आदि तो प्रारम्भिक आवश्यकतायें हैं हीं, किन्तु धर्म, चरित्र, चिन्तन, कार्य (Employment) सबकी उपलब्धि के लिए और सबकी स्वतन्त्रता होनी चाहिए। इसीलिए राष्ट्र अपने प्रत्येक नागरिक की प्रतिष्ठाः की रक्षा करने वाला हो। कोई भी व्यक्ति किसी का दास न हो । सभी में स्वाभिमान हो ।

मातृभूमि को हिरण्यवक्षा कहा गया है । हिरण्यवक्षा का अर्थ हैं - जिसके वक्ष में, हृदय में हिरण्य हो । हिरण्य का मोटा अर्थ स्वर्ण है, किन्तु वास्तव में 'यशो वै हिरण्यम्, तेजो वै हिरण्यं।' राष्ट्र में कृषि भी हो और खनिज भी हो । देश को किसी अन्य देश का मुंह न ताकना पड़े । यह भौतिक आवश्यकतायें हैं । किन्तु यश और तेज राष्ट्रीय आवश्यकतायें हैं । जिस व्यक्ति का यश बढ़ता है उसके चेहरे पर तेज चमक उठता है और इससे बढ़कर और कोई दूसरा खजाना सोना-चांदी हो नहीं सकता ।

thearyasamaj.org

राष्ट्र का यश - राष्ट्र का यश राष्ट्र के निवासियों के चरित्र, उनकी भौतिक और आध्यात्मिक विद्या और राष्ट्र के उत्पादों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है । शेक्सपीयर ने 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' नाटक लिखकर यहूदियों को बेईमान बताकर अपमानित कर दिया । किसी - किसी राष्ट्र के नागरिक धूर्त और चंठ प्रसिद्ध हो जाते हैं । ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यवसायियों ने अंग्रेज जाति को बदनाम कर दिया था । प्राचीन भारत में चोर इतने कम थे कि घरों में ताले नहीं लगते थे । धूर्तता अति न्यून थी । यह है चारित्रिक यश या अपयश।

इसी प्रकार अध्यात्म और विद्या का यश भी सारा संसार स्वीकारता है । भास्कराचार्य की विद्या, चरक-सुश्रुत का औषधि-विज्ञान सारे संसार में प्रतिष्ठित हैं ।

जिन देशों का उत्पाद उत्तम होता है, उनका यश संसार स्वीकारता है । जर्मनी की मशीनें, स्विट्जरलैण्ड की घड़ियां उन देशों का यश बढ़ाती हैं तो चीन के उत्पाद चीन के यश को धूमिल करते हैं किन्तु चीनी जाति की परिश्रमशीलता उनका यश बढ़ाती है ।

मातृभूमि को 'जगतः निवेशनी' कहा गया है । वह सब को आश्रय देने वाली होती है । मातृभूमि प्रगति की सहायक हो । भौतिक प्रगति हो और आध्यात्मिक सम्पन्नता भी आवे। राष्ट्र के लोग ईर्ष्या-द्वेष से रहित हों, एक दूसरे के साथ स्नेह का, आदर का व्यवहार हो। तभी सबको आश्रय मिल पाता है ।

देश के निवासियों को आश्रय मिलने का एक सीधा सा अर्थ यह है कि उन्हें अपनी रोजी-रोटी और व्यवसाय के लिए किसी दूसरे देश का सहारा न ढूंढ़ना पड़े । देश के प्राकृतिक संसाधन और उनके उपयोग की रीति-नीति ऐसी बनाई जाये कि सभी नागरिकों को काम मिल सके और वे सम्मानजनक रीति से अपने जीवन का निर्वाह कर सकें अर्थात् बेकारी का दंश उन्हें दूसरे देशों में भागने के लिए बाधित न करे । यह है मातृभूमि का आश्रय देने का स्वरूप।

मातृभूमि इन्द्र-ऋषभा हो । इन्द्र का अर्थ होता है—ऐश्वर्य । देश में धन का ऐश्वर्य हो, विद्या और चरित्र का ऐश्वर्य हो, देश को अपने चरित्र पर विश्वास हो । पश्चिमी पाकिस्तान के सैनिकों ने बांग्लादेश में महिलाओं का बड़ा अपमान किया था । उनके चरित्र पर पाकिस्तान का मस्तक लज्जा से झुक जाता है । वहीं भारतवर्ष के सैनिकों ने अपने देश की मां, बहन, बेटियों की तरह उनका सम्मान किया । यह राष्ट्र के लिए सचमुच गर्व का विषय है और यह रुपये - पैसे, धन-सम्पत्ति से भी बड़ा ऐश्वर्य है । चरित्र का ऐश्वर्य वास्तविक ऐश्वर्य है ।

अन्तिम प्रार्थना है कि मातृभमि हमारे लिए द्रविण को धारण करें । सम्पत्ति चल और अचल दो तरह होती हैं । देश में खनिज आदि हो यह अचल सम्पत्ति है । किन्तु उद्योग व्यवसाय, कारबार, तकनीक, विद्या आदि चल सम्पत्ति है । अंग्रेजी में इसे Liquidity कहते हैं । यह हम दूसरे देशों को दे सकते हैं । देश की धरती और जलवायु अचल है। किन्तु राष्ट्र में कारबार, उद्योग, व्यवसाय राष्ट्र की बहुआयामी सम्पन्नता के रूप ों हैं । मातृभूमि हमें इन सबसे सम्पन्न बनावें, यही प्रार्थना की गई है ।

साभार : वेद-वीथिका

thearyasamaj.org

''महर्षि वचन सुधा'' (३७)

– प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

''ब्राह्मसमाजी और प्रार्थनासमाजी समीक्षा''

''भला, जब आर्यावर्त्त में उत्पन्न हुए हैं आर्य्यावर्त्त देश का अन्न-जल खाया-पिया, अब भी खाते-पीते हैं, अपने माता, पिता, पितामहादि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, ब्राह्मसमाजी और प्रार्थनासमाजियों का एतद्देशस्थ संस्कृत-विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंगलिश भाषा पढ़के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है ?''

—सत्यार्थ० एकादश समु०

व्याख्या–इस उद्धरण से एक बात बहुत सुस्पष्ट हो जाती है कि स्वामी दयानन्द जी में स्वदेशभक्ति बहुत अधिक थी। इस उद्धरण में ब्राह्मसमाजियों को विशेषकरके लक्ष्य में रखा है।

स्वामी दयानन्द जी से लगभग पचास वर्ष पूर्व राजा राममोहन राय का समय है। वे अंग्रेजी के बहुत अच्छे विद्वान् थे और ईसाई मत पर उनको बड़ी आस्था थी। उन्होंने उपनिषदों का अध्ययन किया और मूर्ति पूजा का विरोध भी किया, लेकिन वे ईसाई मत से प्रभावित थे। ब्राह्मसमाजी अंग्रेजी राज और अंग्रेजी भाषा के भी समर्थक थे। राजा राममोहन राय ने संस्कृत कॉलेज खोलने के विरोध में वायसराय को पत्र भी लिखा था।

आगे चलकर ब्राह्मसमाज की दो धाराएँ बनी—(१) आदि ब्राह्मसमाज और (२) नवीन ब्राह्मसमाज। आदि ब्राह्मसमाज के प्रमुख नेता हुए देवेन्द्रनाथ ठाकुर और नवीन ब्राह्मसमाज के नेता हुए केशवचन्द्र सेन। केशवचन्द्र सेन ने ब्राह्मसमाज को ईसाईयों के बहुत समीप ला दिया। केशवचन्द्र सेन का उपासना स्थल गिरजाघर की तरह है, वह मन्दिर की तरह दीखता है। केशवचन्द्र सेन बड़े बुद्धिमान थे लेकिन सांसारिक लोक लाभ की आकांक्षा बहुत थी। उन्होंने यहां तक प्रचारित कर दिया कि उन्हें ''इलहाम'' (ईश्वर की प्रेरकवाणी) भी होता है।

राजा राममोहन राय अंग्रेजी राज्य और अंग्रेजी भाषा को अच्छा और भारतवर्ष के लिए उपयोगी समझते थे। केशवचन्द्र सेन भी इसी ढर्रे पर चल रहे थे। इसीलिए स्वामी दयानन्द ने यह आलोचना की है।

देवेन्द्रनाथ ठाकुर में उपनिषदों के प्रति बड़ी श्रद्धा थी और वे भारतीयता के समर्थक भी थे। उन्होंने शान्तिनिकेतन में भारतीय पद्धति पर शिक्षा साधना के लिए प्रयास किया था। स्वामी दयानन्द की आलोचना उनके विरुद्ध इतनी तीव्र नहीं है।

राजा राममोहन राय और केशवचन्द्र सेन संस्कृत विद्या के गम्भीर जानकार नहीं थे। इनके विदेश प्यार की और स्वदेश भक्ति की न्यूनता की स्वामी जी ने आलोचना की है। स्वामी जी का स्वदेश प्रेम रेखांकित करने योग्य है।

फोन : (०३३) २५२२२६३६
मो० : ९४३२३०१६०२

ईशावास्यम्
पी-३०, कालिन्दी
कोलकाता-७०००८९

thearyasamaj.org

ओ३म्

''वैदिक धर्म तथा मोक्ष''

–श्री कामता प्रसाद मिश्र

मोक्ष एक व्यापक शब्द है, जिसका प्रयोग विभिन्न मतावलम्बी लोग अनेक प्रकार से करते हैं। परन्तु यहाँ मोक्ष से अभिप्राय दुःख के बंधन से मुक्त होना है । मोक्ष का शाब्दिक अर्थ है छुटकारा। संसार का प्रत्येक व्यक्ति दुःख से मुक्त होना चाहता है किन्तु मनुष्य शरीर में रहते हुए दुःख से छूटना असम्भव है । मोक्ष ही एक ऐसी अवस्था है जिसमें आत्मा दुःख की अनुभूति से सर्वथा मुक्त होकर परमानन्द को प्राप्त करता है, क्योंकि आनन्द की प्राप्ति करना मानव जीवन का परम लक्ष्य है। संसार के भौतिक पदार्थों से मनुष्य इन्द्रिय सुख की प्राप्ति तो करता है परन्तु आनन्द की प्राप्ति भौतिक पदार्थों से नहीं हो सकती । यह आनन्द आत्मा को मोक्ष में ही प्राप्त होता है । सोना, चांदी, हीरे जैसे वैभव, महल, पत्नी, पुत्र तथा सभी ऐश्वर्य आनन्द नहीं दे सकते ।

वेदादि शास्त्रों में मुक्ति के विषय में वर्णन मिलता है जहाँ पर एक प्रकार की मुक्ति बतलाई गई है। मुक्ति का केवल एक मार्ग है, वह है केवल परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त होना । यजुर्वेद में लिखा है –

तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

यजु० ३१।१८॥

अर्थ –''उस परमात्मा को जानकर ही मृत्यु को जीत सकते हैं दूसरा और कोई मार्ग नहीं है।''

यहाँ प्रश्न होता है कि परमात्मा कैसा है ? परमात्मा कहाँ रहता है ? परमात्मा क्या करता है ? ऐसे अनेक प्रश्न लोगों के मस्तिष्क में उठने लगते हैं जो स्वाभाविक भी है ।

वेद में उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें मिलते हैं जो अनेक मंत्रों में समाहित हैं परन्तु यहाँ यह मंत्र प्रस्तुत है ।

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः ।

यजु० ३१।२॥

अर्थ – उस परमात्मा की कोई प्रतिमा (मूर्ति या पैमाना, नापतौल) नहीं है जिसका यश या कीर्ति महान है ।

अपादशीर्षा । ऋ० ४।१।११॥

अर्थ – वह पाँव सिर आदि अवयवों से रहित निराकार है ।

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमिं.. सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठदृशाङ्गुलम् ।

यजु० ३१।१ ॥

अर्थ – वह सृष्टिकर्त्ता, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् परमात्मा असंख्य सिरों, नेत्रों तथा पगों वाला है अर्थात् जो सर्वव्यापक है, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों में सब ओर से व्याप्त होकर पाँच स्थूलभूत तथा पाँच सूक्ष्मभूतों युक्त जगत को अपनी सत्ता से पूर्ण कर जहाँ जगत नहीं वहाँ भी पूर्ण हो रहा है, सब

thearyasamaj.org
जगत के बनाने वाले परिपूर्ण सच्चिदानन्द स्वरूप नित्य शुद्ध, बुद्ध मुक्त परमेश्वर की उपासना से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करो ।

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदिं वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमें व्योमन्तसो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ।।

ऋ०मं०८। अ०७।व०१७

इस मंत्र का महर्षि दयानन्द जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भाष्य किया है :—

''जिस परमेश्वर के रचने से जो यह नाना प्रकार का जगत उत्पन्न हुआ है वही इस जगत को धारण करता, नाश करता और मालिक भी है । हे मित्र लोगो ! जो मनुष्य उस परमेश्वर को अपनी बुद्धि से जानता है, वही परमेश्वर को प्राप्त होता है और जो उसको नहीं जानता वही दुःख में पड़ता है । जो आकाश के समान व्यापक है, उसी ईश्वर में सब जगत निवास करता है और जब प्रलय होता है तब भी सब जगत कारणरूप हो के ईश्वर के सामर्थ्य में रहता है और फिर भी उसी से उत्पन्न होता है ।''

उपर्युक्त मंत्रों में पूर्व के प्रश्नों का उत्तर प्राप्त हो जाता है । परमात्मा का कोई रूप, आकार तथा प्रतिमा आदि नहीं है और ना ही हो सकती है । परमात्मा सर्वव्यापक है, सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर, अभय, अजन्मा तथा निराकार है । परमात्मा सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों का रचयिता है वही सब को धारण कर रहा है वही पालक, पोषक तथा प्रलय कर्त्ता भी है तथा असंख्य जीवों के कर्मों का फल देता और मोक्ष दाता भी है ।

वैदिक मान्यतानुसार मोक्ष में आत्मा की सत्ता बनी रहती है किन्तु शरीराभाव रहता है क्योंकि शरीर से ही जीवात्मा को सुख तथा दुःख की अनुभूति होती है । मुक्ति की अवस्था में शरीर रहित होने के कारण जीवात्मा को सुख-दुःख की अनुभूति नहीं होती । सामान्य लोगों में यह धारणा प्रचलित है कि स्वर्ग तथा नरक किसी विशेष स्थान पर होता है, जहाँ स्वर्ग में सुख तथा नरक में दुःख जीव भोगता है किन्तु यह मिथ्या धारणा है । यह संसार ही स्वर्ग है तथा यह संसार ही नरक है । वहीं जीवात्मा मोक्ष की अवस्था में सर्वव्यापक आनन्दस्वरूप परमात्मा में स्वतंत्र विचरण कर आनन्दानुभूति प्राप्त करता रहता है ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी अनुपम कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के नवम सम्मुल्लास में मुक्ति तथा बन्ध विषय पर लिखते हैं :—

प्रश्न — मुक्ति और बन्ध किन-किन बातों से होता है ?

उत्तर — ''परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपात रहित न्यायधर्मानुसार ही करे । इत्यादि साधनों से मुक्ति और इसके विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से बंध होता है ।''

thearyasamaj.org

प्रश्न — मुक्ति में जीव का लय होता है वा विद्यमान रहता है ?

उत्तर — विद्यमान रहता है ।

प्रश्न — कहाँ रहता है ?

उत्तर — ब्रह्म में ।

प्रश्न — ब्रह्म कहाँ है और वह मुक्त जीव एक ठिकाने रहता है वा स्वेच्छाचारी होकर सर्वत्र विचरता रहता है ?

उत्तर — जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है उसी में मुक्त जीव अव्याहतगति अर्थात् उसको कहीं रुकावट नहीं, विज्ञान आनन्दपूर्वक स्वतंत्र विचरता है । स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश में आगे लिखते हैं :—

''मोक्ष में भौतिक शरीर व इन्द्रियों के गोलक जीवात्मा के साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण रहते हैं । जब सुनना चाहता है तो श्रोत्र, स्पर्श करना चाहता है तब त्वचा, देखने के संकल्प से चक्षु, स्वाद के अर्थ रसना, गंध के लिए घ्राण, संकल्प विकल्प करते समय मन, निश्चय करने के लिए बुद्धि, स्मरण करने के लिए चित्त और अहंकार के अर्थ अहंकार रूप अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है और संकल्प मात्र शरीर होता है जैसे शरीर के आधार रहके इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है वैसे अपनी शक्ति से मुक्ति में सब आनन्द भोग लेता है।''

(नवम समु०)

सामान्यतः भारतीय मतमतान्तरों में यह भ्रान्त धारणा है कि —

१. मोक्ष में जीवात्मा का लय अर्थात् जीव परमात्मा में विलीन हो जाता है ।

२. मोक्ष किसी विशेष स्थान का नाम है । जहाँ से जीव पुनर्जन्म को नहीं पाता है ।

३. मोक्ष में भौतिक वस्तुओं के समान सुख प्राप्त होते हैं ।

परन्तु यह भ्रान्त एवं मिथ्या धारणा है । मोक्ष में जीवात्मा का लय नहीं होता और न मोक्ष का कोई विशेष स्थान है और न ही भौतिक वस्तुओं का सुख ही प्राप्त होता है, क्योंकि यह सुख क्षणिक हैं । भौतिक वस्तुओं का सुख शरीर के रहने पर ही संभव है जबकि मोक्ष में जीव शरीर रहित होता है ।

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में मोक्ष के विषय में लिखा है —

''जो मुक्ति में जीव का लय होता तो मुक्ति का सुख कौन भोगता ? और जो जीव के नाश को ही मुक्ति समझते हैं वे तो महामूढ़ हैं क्योंकि मुक्ति जीव की यह है कि दुःखों से छूट कर आनन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, अनन्त परमेश्वर में जीवों का आनन्द में रहना ।''

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि मोक्ष में जीव आनन्द को प्राप्त करता है जो परमात्मा में विलीन नहीं होता, मोक्ष की स्थिति में दुःखों से पूर्ण मुक्त रहकर लोक लोकान्तरों में भ्रमण करता हुआ पूर्ण सच्चिदानन्द परमात्मा का आनन्दानुभूति करता है ।

मोक्ष की एक अवधि होती है उसके पूर्ण होने के पश्चात् जीव पुनः पुनर्जन्म प्राप्त करता है । वेदमतानुसार जीव मोक्ष की स्थिति में परमात्मा के साथ एक सखा या मित्र के समान आनन्द प्राप्त करता है वहाँ पर (पानी, दूध, शहद, फल, मदिरा सुन्दरियां आदि) की प्राप्ति की कल्पना मिथ्या है।

मुण्डकोपनिषद में कहा गया है :—

ते ब्रह्म लोके ह परान्त काले परामृतात परिमुच्यन्ति सर्वे । (मुण्डक० ३-२६)

thearyasamaj.org
वे मुक्त जीव मुक्ति के आनन्द को भोग कर महाकल्प के पश्चात् मुक्ति सुख को प्राप्त होते हैं। वेद में भी कहा है :—

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम ।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरम् च ।।

ऋ० १।२४।२

भावार्थ — हम स्वप्रकाशस्वरूप, अनादि, सदामुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें जो हमको मुक्ति में आनन्द भुगाकर पृथ्वी पर माता-पिता के दर्शन कराता है ।

पौराणिक लोग चार प्रकार की मुक्ति की कल्पना करते हैं । १. सालोक्य अर्थात् ब्रह्मलोक की प्राप्ति । २. समीप्य अर्थात् ईश्वर की समीपता । ३. सानुज्य अर्थात् छोटे भाई के समान होना । ४. सायुज्य अर्थात् ईश्वर से संयुक्त होना । ये कोई मुक्तियाँ नहीं हैं, ये मुक्तियाँ तो जीव को स्वतः हीं प्राप्त है । सम्पूर्ण ब्रह्मांड ही ब्रह्मलोक है । सभी ब्रह्मलोक में निवास करते हैं । अतः सालोक्य मुक्ति तो सभी जीवों को प्राप्त है । जीव परमात्मा के निकट है अतः उसे सामीप्य मुक्ति स्वतः प्राप्त है । सभी जीव ईश्वर से छोटे हैं अतः सानुज्य मुक्ति सभी जीवों को अपने आप प्राप्त है । ईश्वर सभी जीवों में व्यापक है अतः सानुज्य मुक्ति भी स्वतः सभी को प्राप्त है । यह मोक्ष की धारणा अवैज्ञानिक है, तर्क संगत भी नहीं है । ईसाई तथा इस्लाम के मतानुयायी शरीर द्वारा सांसारिक पदार्थों के उपभोग को मोक्ष मानते हैं, वह स्वर्ग (हैवेन अथवा वहिस्त) को एक स्थान विशेष पर मानते हैं । ईसाईयों में तो स्वर्ग में विवाह तक होता है और इस्लाम में स्वर्ग वालों को खाद्य पदार्थ के साथ हूर और गिल्में भी प्राप्त होते हैं । अतः इस प्रकार सांसारिक वस्तुओं का स्वर्ग में भी कल्पना करना स्वर्ग की कोई विशेषता नहीं है । ये विचार भी न युक्ति संगत है न वैज्ञानिक । कुछ मतावलम्बियों के संक्षेप में मोक्ष की धारणाओं का वर्णन किया है जो आवश्यक भी था । अब वेद के मंत्र द्वारा मोक्ष की मान्यता का वर्णन करते हैं ।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमान शानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।। यजु० ३२।१०

भावार्थ — सब मनुष्यों को यह जानना चाहिए कि वही परमेश्वर हमारा बंधु अर्थात् दुःख का नाश करने वाला, सब सुखों को उत्पन्न तथा पालन करने वाला है । तथा वही सब कामों को पूर्ण करता और सब लोकों को जानने वाला है कि जिसमें देव अर्थात् विद्वान् लोग मोक्ष को प्राप्त होके सदा आनन्द में रहते हैं और वे तीसरे धाम अर्थात् शुद्ध स्वत्व से रहित होके सर्वोत्तम सुख में सदा स्वच्छन्दता से रमण करते हैं ।

अतः मनुष्य शरीर और साधन परिमित है उसको असीम आनन्द कैसे प्राप्त होगा । इसलिये वेदों में जो विचार तथा मान्यतायें हैं वही तर्कसंगत तथा वैज्ञानिक हैं । अतः अखिल मानव समाज को अनुसरण करने योग्य है ।

—म०नं० २४७५ निराला नगर,
शिवपुरी, सुल्तानपुर,
उत्तर प्रदेश

thearyasamaj.org

विश्व संगठन के वैदिक आधार – मैत्री और समता

– प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है । डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त – **''योग्यतम की जीत''** । योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वही संसार में टिकता है । उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है । जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं । शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है । यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है ।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता । मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है । मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा । मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है । सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है । परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है – **''अश्रद्धा मनृत्ये दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।''**

अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता इत्यादि को देखा और सत्य, करुणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यो को पाया । वेद का मन्त्र यह कहता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करुणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है । अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार हैं ।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त ''योग्यतम की जीत'' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया । किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है । यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है । जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता ।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार **''उपनिवेशवाद''** को बनाया । इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेश बनाये । उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना । इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए । प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना ।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग आफ नेशन्स का संगठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था । इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षों में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने

thearyasamaj.org
वाला हिरोशिमा, नागासाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त **''संयुक्त राष्ट्र संघ''** **(यू०एन०ओ०)** का संगठन किया । विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से सामने था । अतः थोड़ी अधिक सूझ-बूझ, मैत्री और समता दिखायी पड़ती है । संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना । साधारण समिति, सुरक्षा परिषद, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी । यह सभी संगठन थोड़े अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किन्तु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है । अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है । अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार — वीटो-संगठन को निर्बल बना रहा है । यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं । यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है ।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है । संसार की अन्य मुद्रायें, रुपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है । विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं, जबकि विनिमय का आधार **''क्रय शक्ति की समानता'' ।** (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होना चाहिये । यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएँ हैं। ये निर्बलताएँ विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती है ।

वैदिक आदर्शों के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है —

''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चिद् दुखःभाग् भवेत् ।।''

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था । वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रश्रय देते हैं ।

वेद की दृष्टि में भूतमात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है —

''मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।।''

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें।

इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है । पशु-पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है । यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने ।

संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है । यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा ।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणा :– वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है — **''ऋग्वेद का मण्डल-मणि-सूत्र ।''** ऋग्वेद

thearyasamaj.org

में दस मण्डल हैं। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है । यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है । ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मन्त्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है –

''ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः ।
सामनेन वो हविषा जुहोमि ।।''

मन्त्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो । सबके मन व चित्त में समानता हो । सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता हो और सारे राष्ट्रों का प्राप्तव्य समानता के आधार पर हो ।

यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है ।

सम्पर्क : **ईशावास्यम्**
पी-३०, कालिन्दी हाउसिंग एस्टेट
कोलकाता-७०००८९
फोन - ०३३-२५२२२६३६,
९४३२३०१६०२

''वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन''

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी परिसर में प्रान्तीय स्तर का एक बृहद् **वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन** का आयोजन दिनांक ५,६,७ दिसम्बर २०१४ को आयोजित किया जा रहा है । जिसमें भारतवर्ष के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है । सम्मेलन में वेद के सूक्ष्मतम विषयों पर चिन्तन, चर्चा व संगोष्ठी होगी साथ ही सस्वर वैदिक पाठों से वातावरण सुवाषित होगा। भारतवर्ष के उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान्, आचार्य सहित समाजसेवी महानुभाव व महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं मंत्रीगणों के पधारने की सम्भावना है ।

अतः अभी से आप सभी को आयोजन का पावन निमन्त्रण भेज रहे हैं । आयोजन की भव्यता व महत्ता को सार्वजनिन करते हुए अनुरोध है कि इन तिथियों में किसी प्रकार का आयोजन अपने यहां न रखें । सम्मेलन में पधार कर अनुगृहीत करें ।

कोमल आर्य
आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी
पो० पचेड़ा, जिला-महासमुन्द
छत्तीसगढ़
मो० - ९६१७०८२०००

thearyasamaj.org

राष्ट्रीय पर्व बनाम आर्य समाज

–श्री नरसिंह सोलंकी

हम १५ अगस्त सन् १९४७ से हर साल भारतीय स्वतंत्रता दिवस एवं २६ जनवरी सन् १९५० से भारतीय संविधान लागू होने का गणतंत्र दिवस मनाते आ रहे हैं । १५ अगस्त को लाल किले पर प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया जाता है और राष्ट्र को संबोधन देते हैं, जिसमें भावी नीतियों की झलक दिखलाई पड़ती है । २६ जनवरी को दिल्ली के राजपथ पर राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है जिसमें देश विदेश के मेहमान, पदाधिकारी, नेता, गणमान्य लोग व आम जनता भी शरीक होती है । कार्यक्रम में मिलिट्री परेड, घातक हथियार प्रदर्शन, प्रदेशों की सांस्कृतिक झांकियाँ, वीर बालकों की सवारी, मेडल वितरण एवं लड़ाकू विमानों का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया जाता रहा है ।

स्थानीय स्तर पर भी ये दोनों कार्यक्रम प्रदेश व जिला स्तर एवं सरकारी कार्यालयों व सरकारी एवं निजी विद्यालयों में बड़े उत्साह के साथ सरकारी आदेशानुसार मनाये जाते हैं। इनाम, प्रशंसा-पत्र व मिठाइयाँ भी खूब बांटी जाती हैं । लेकिन अफसोस की बात यह है कि जनता जनार्दन ने ये पर्व अपने स्तर पर स्वीकार नहीं किये हैं । कितना अच्छा होता यदि भारत का हर नागरिक अपने घर-संस्थान में तिरंगा झंडा फहराता, राष्ट्रीय गान गाता व मिठाई बांटता । कुछ लोग तो यह भी मानते हैं कि तिरंगा झंडा तो काँग्रेस का है, इससे हमें क्या लेना देना लेकिन यह तो स्पष्ट है कि तिरंगा झंडा ऊपर से केशरिया बहादुरी का, नीचे हरा हरियाली खेती का एवं बीच में सफेद शान्ति का प्रतीक है, जिसके बीच में अशोक चक्र की २४ पंखुड़ियां होती है व कुल साइज १×१.५ का अनुपात रहता है । काँग्रेस के झंडे तिरंगे के बीच में हाथ के पंजे का निशान है । अलग-अलग राजनैतिक दलों के उनके अलग-अलग प्रकार के झंडे हैं, वैसे ही धार्मिक पंथों के भी तरह-तरह के झंडे हैं । राष्ट्रीय ध्वज के अलावा सभी प्रकार के झंडे चौबीसों घंटे लहराते रहते हैं । जहां तक राष्ट्रीय पर्व एवं राष्ट्रीय ध्वज का प्रश्न है वहां पार्टी अपना झंडा नहीं लगाकर केवल राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा ही फहरायेगी वह भी सुबह से शाम सूर्यास्त तक ही, चाहे न्यायालय हों अथवा प्रशासनिक भवन ।

thearyasamaj.org

हमारे आर्य समाज एवं उच्च संगठनों में राष्ट्रीय पर्व पर तिरंगा ध्वज फहराने का रिवाज नहीं है । हाँ, अगर कहीं किसी ने पर्व मना भी लिया तो उसका उल्लेख सामने नहीं आता। हमने केवल ओ३म् का भगवा झंडा ही मान रखा है । कहने को तो हम बड़े गर्व से कहते हैं कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ९० प्रतिशत लोग जो शहीद हुए व यातनाएं सहीं वो आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित थे । हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था तो उसका प्रतिफल राष्ट्रीय पर्व मनाने में पीछे क्यों रहे ? हम भारतवासी जैसे होली, दिवाली, ईद-उल-फितर, गणेश चतुर्थी, क्रिसमस डे, लोहड़ी, दुर्गाष्टमी आदि पर्व बड़े उत्साह से मनाते हैं, वैसे ही राष्ट्रीय पर्व क्यों नहीं मनाते ? क्या हममें किसी प्रकार की कोई राष्ट्रीयता की कमी तो नहीं है ? हमें इस विषय में गम्भीरता से सोच विचार की आवश्यकता है ।

मैं (लेखक) नौकरी में अथवा सेवा निवृत्ति के बाद में भी जहां कहीं पर रहा उपरोक्त दोनों राष्ट्रीय पर्व मनाता आ रहा हूँ । मैंने प्रयत्न करके पं० कमलेश कुमार अग्निहोत्री का प्रवचन कार्यक्रम १५ अगस्त २००९ को श्री सरस्वती बालवीणा भारती सी. से. स्कूल, सिरोला बेरा, सूरसागर जोधपुर में रखा था, जो अत्यन्त ही प्रभावशाली रहा, लोगों ने खूब सराहा, जिसका कैसेट भी मेरे पास उपलब्ध है । इसी प्रकार १५ अगस्त, २०१३ को भी पं० रामनिवास गुणग्राहक का प्रवचन कार्यक्रम उसी स्कूल में रखा, जो बड़ा प्रशंसनीय रहा (यह कैसेट भी मेरे पास उपलब्ध है) । इससे पहिले आर्य समाज सूरसागर एवं राजकीय बालिका सी०से० स्कूल सूरसागर के प्रांगण में झंडारोहण कर प्रवचन दिया गया ।

हमें प्रयत्न करके हर आर्य समाज, आर्य वीरदल शाखा एवं उच्च स्तरीय आर्य प्रतिनिधि समाजों में राष्ट्रीय पर्व मनाने की शुरुआत करनी चाहिए । देर आयद, दुरुस्त आयद । हमने सारे संसार को आर्य बनाने का बीड़ा उठा रखा है, तो हमें सबसे पहले हमारी उच्च कोटि की राष्ट्रीयता प्रस्तुत करनी चाहिए ।

मंत्री,
आर्य समाज सूरसागर, जोधपुर
मो० - ९४१३२८८९७९

—०—

thearyasamaj.org

११०वीं जयन्ती पर विशेष (२ अक्टूबर २०१४)

स्व० लालबहादुर शास्त्री – एक श्रद्धांजलि

–प्रो० ओमकुमार आर्य

प्राणों से भी प्यारी थी, तुमको भारत की माटी ।
जिससे निर्मित गर्वीली मेवाड़ की हल्दीघाटी ।।
संकट की घड़ियों में तूने माँ की लाज बचाई ।
तुझ फौलादी से टकराकर शत्रु ने मुंह की खाई ।।

तेरे नैटों की मार देखकर दंग रह गई दुनियाँ ।
अमरीका तक ने दाबी थीं दांतों बीच अंगुलियाँ ।।
फिर बरसों बाद सुनी जग ने निर्भीक हुंकार तुम्हारी ।
'कायरता कर नहीं सकती शांति की पहरेदारी ।।'

निस्तेज अहिंसा का राजकाज से कोई मेल नहीं है ।
राजनीति है राजनीति, बच्चों का खेल नहीं है ।।
मूर्तरूप हुई तुझ में भारत की परम्परायें ।
अंगड़ाई ले उठीं पुनः चिर सुप्त वीर गाथायें ।।

तुझसे प्रेरणा पा सेना ने ऐसा इतिहास रचा था ।
'सैब्रजैट' और 'पेटन टैंक' का न कहीं निशान बचा था ।।
हे चाणक्य, हे रामचन्द्र, हे कृष्ण सुदर्शनधारी ।
तुम्हें जन्म दे धन्य हो गई भारत जननी प्यारी ।।

अपनी सूझबूझ से तूने हिन्द की निद्रा तोड़ी ।
वर्तमान से भव्य अतीत की बिखरीं कड़ियाँ जोड़ी ।।
भारत के गौरव की तू ने जग पर धाक बिठा दी ।
देखे तुममें दुनिया ने गौतम, प्रताप, शिवाजो ।।

तू सूरज था तम की काली चादर चीर उगा था ।
साँझ कहाँ होने पाई तू बीच दोपहर छुपा था ।।
जनता से आया था तू जनता का सजग सिपाही था ।
लाखों माँओं का बेटा था लाखों बहनों का भाई था ।।

तुमको खोकर भारत ने एक स्वर्णिम युग खोया है ।
इसीलिये वह लुटा-लुटा सा फूट-फूट रोया है ।।
संकट की घड़ियों में ये आकाश के चांद सितारे ।
तेरा आह्वान किया करेंगे अपनी भुजा पसारे ।।

भारत की ओर यदि बुरी नीयत से कोई शत्रु आयेगा ।
खड़ा जवानों के रूप में सरहद पे तुम्हें पायेगा ।।
जब तक बहेगी हिमगिरि से गंगा की निर्मल धारा ।
तब तक अमर रहेगा 'बहादुर' प्रेरक नाम तुम्हारा ।।

तेरे पदचिह्न अमिट रहेंगे क्रूर काल की छाती पर ।
कृतज्ञ राष्ट्र याद करेगा आँखों में आँसू भर कर ।।

उप-मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा
१६०७/७ जवाहर नगर, पटियाला चौक
जींद-हरियाणा-१२६१०२
मो० - ९४१६२९४३४७, ०१६८१-२२६१४७

thearyasamaj.org

अध्यापक के लिए कुछ व्रतों का पालन आवश्यक

डॉ० अशोक आर्य

प्राचीन काल के गुरुकुलों के गुरु ज्ञान बांटने से पूर्व अपने लिए भी कुछ व्रत धारण करते थे, अपने शिष्य को ज्ञान देने के लिए अपने जीवन में भी कुछ प्रतिज्ञाएँ लिया करते थे । इन प्रतिज्ञाओं के आधार पर अपने जीवन को चलाते हुए शिष्य को ज्ञान के साथ विनोद करना सिखाते थे । इससे ही उसमें ज्ञान का प्रकाश होता था । आज की शिक्षा पद्धति की यह एक बहुत बड़ी विडम्बना ही कही जा सकती है कि आज का अध्यापक शिक्षा देते समय अपने लिए कोई नियम, कोई व्यवस्था, कोई मानदंड आदि निर्धारित नहीं करता । करे भी क्यों ? क्योंकि उसने एक निश्चित राशि पाने के लिए शिक्षा देने का यह मार्ग पकड़ा है । यह मार्ग उसने अपनी रुचि से नहीं लिया, बस बाध्यता से लिया है तथा इस बाध्यता को उसकी मजबूरी भी कह सकते हैं, जिस कारण वह अपने लिए कुछ भी मानदंड नहीं बनाता, बस कक्षा में आता है, दिए गए पाठ्यक्रम के अनुसार कुछ पढ़ाता है तथा चला जाता है । गुरु के व्रतों पर प्रकाश डालते हुए ऋग्वेद ५.२.८ में इस प्रकार कहा गया है :—

हृणीयमानो अप हि मदेये: प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहसग्ने अनुषिष्ट आगाम् ।। ऋग्वेद ५.२.८.

मन्त्र बता रहा है कि हमें उत्तम उपदेश कौन दे सकता है ? हमें उत्तम ज्ञान कौन दे सकता है ? भाव यह है कि जिस गुरु से, जिस अध्यापक से हम शिक्षा ग्रहण करने जा रहे हैं, उसमें वह सब गुण हैं या नहीं जो एक उत्तम शिक्षक में होने चाहिए । अब गुण कौन से हैं अर्थात् यह सब प्रतिज्ञाएं कौन-सी हैं, जो एक उत्तम गुरु को ज्ञान का प्रसार करने से पूर्व ज्ञान बांटने से पूर्व स्वयं के लिए लेनी आवश्यक होती हैं । इन प्रतिज्ञाओं का, इन व्रतों का इस मन्त्र के आरम्भ में ही विस्तार से वर्णन कर दिया गया है । इन व्रतों के सम्बन्ध में मन्त्र बता रहा है। गुरु ऐसा हो, जो देवों अर्थात् सत्यनिष्ठ, निष्पाप, विद्वान तथा परोपकारी व्रतों को धारण करने वाला हो । ऐसा शिक्षक ही हमें उत्तम उपदेश दे सकता है । इस उपदेश के अनुसार मन्त्र बता रहा है कि उत्तम उपदेश, उत्तम ज्ञान अथवा उत्तम शिक्षा पाने के लिए गुरु में यह गुण होना आवश्यक है कि :—

१. गुरु सत्यनिष्ठ हो :–

गुरु का सत्यनिष्ठ होना आवश्यक है । सत्य पर चलने वाला गुरु ही अपने शिष्यों को सत्य आचरण का उपदेश दे सकता है । सत्य पर चलने वाले का आचरण सदा सत्यवादी ही होता है । जब वह स्वयं अपने जीवन को सत्य के मार्ग पर चलाता है तो उसके अनुगामी, उसके

thearyasamaj.org

शिष्य भी सत्य का ही मार्ग पकड़ते हैं । इस प्रकार उनका चरित्र उच्च बनता है, उन्नत मार्ग पर चलते हुए उत्तम शिक्षा पाने में सफल होते हैं । यदि गुरु स्वयं ही असत्य-पथ-गामी होगा तो वह अपने शिष्य को सत्य पथ पर चलने के लिए कैसे प्रेरित कर सकता है ?

२. गुरु निष्पाप हो :-

गुरु का निष्पाप होना भी उत्तम ज्ञान बांटने के लिए एक आवश्यक नियम है । जो गुरु सदा पापाचरण में व्यस्त रहता है, वह कभी स्वाधीन नहीं रह सकता । वह सदा भयभीत सा ही रहता है तथा व्यसनों में डूबा रहता है ।

उसे सदा यह भय बना रहता है कि उसके पापों भरे कार्यों का किसी को पता न चल जावे। यदि किसी को उसके पापों का पता चला तो न जाने उसका क्या हाल होगा ? फिर पापाचरण में लगा गुरु भी पापों का ही प्रचार करेगा तथा अपने शिष्यों को भी पाप मार्ग पर चलने का ही उपदेश देगा । ऐसा गुरु कभी उत्तम शिक्षा देगा, उत्तम ज्ञान देगा, यह तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिए गुरु का निष्पाप होना भी उत्तम ज्ञान के लिए अत्यंत उपयोगी होता है।

३. गुरु परोपकारी व्रत वाला हो :-

एक अच्छे गुरु के लिए यह भी आवश्यक होता है कि वह परोपकार का व्रत धारण किये हुए हो । गुरु का कार्य शिक्षा का दान करना होता है । ज्ञान का दान करते हुए उसे अनेक विद्यार्थी, अनेक शिष्य ऐसे भी मिलते हैं, जो किसी दु:ख, कष्ट या धनाभाव के कारण ज्ञानार्जन नहीं कर सकते । अच्छा गुरु इस प्रकार के शिष्यों की खोज करें । उसके कष्टों को, उसके क्लेशों को समझे, उसकी सब प्रकार की समस्याओं को समझ कर उन समस्याओं के समाधान का उपाय ढूंढने में उसका मार्गदर्शन ही नहीं सहयोग भी करे । यह सहयोग न केवल तन व मन का ही हो बल्कि धन का भी हो सकता है । सब प्रकार का सहयोग देते हुए उसके सब काँटों को दूर कर उसके ज्ञान को बढ़ाने का कारण बने । इसलिए गुरु का परोपकारी होना भी आवश्यक है।

जिस गुरु में इस प्रकार के तीन गुण होते हैं, वह अपने शिष्यों को उत्तम शिक्षा, उत्तम ज्ञान देने वाला होता है । इस प्रकार का गुरु न केवल अपने ही क्रोधादि सब प्रकार के विकारों को दूर करने में सफल होता है बल्कि इस प्रकार का गुरु अपने शिष्यों में भी इस प्रकार के विकार नहीं आने देता तथा उनमें उत्तम ज्ञान का संचार बड़ी सरलता से कर देता है । इस प्रकार का जब विद्वान् गुरु मिल जाता है तो वह ही हमें हमारी ही अनुकूलता के अनुसार तथा हमारी ही प्रवृत्ति के अनुसार और हमारी योग्यता का ध्यान रखते हुए तदनुरूप ही शिक्षा, ज्ञान देता है । इस प्रकार के गुरु से हम पूर्ण अनुशासन में रहते हुए, सब प्रकार की उच्छृंखलता से बचते हुए तथा कर्तव्यनिष्ठ बनकर उत्तम शिक्षाओं को पाकर हम अपने कार्यक्षेत्र में उतरें ।

इस प्रकार के उत्तम गुणों वाले, दिव्य गुणों से सम्पन्न गुरु अपने शिष्यों को सदा अपने पुत्र के रूप में स्वीकार करते हैं । इस कारण वह अपने शिष्यों को वह सब ज्ञान बड़ी तत्परता से देते हैं जो वह अपनी संतान को देने की इच्छा रखते हैं । इतना ही नहीं अपने गुरुकुल के

thearyasamaj.org

सब शिष्यों को वह उनकी माता का सा स्नेह व प्यार भी देते हैं । आधुनिक शिक्षा में इनमें से एक भी गुण अध्यापक में दिखाई नहीं देता । हाँ अपवाद स्वरूप कहीं एकाध अध्यापक मिल जाता है अन्यथा आज का अध्यापक तो वेतन भोगी होने के कारण अपने वेतन तक सीमित शिक्षा ही दे पाता है । आज की शिक्षा राजाश्रित होने के कारण आज के अध्यापक पर अनेक प्रकार के अंकुश भी होते हैं, जिन से वह निकल नहीं सकता । इस कारण उत्तम ज्ञान वह नहीं दे सकता। हमारी शिक्षा की इस समस्या का समाधान हमें वेद के इस मन्त्र से ही मिलता है । जब हम इस मन्त्र के अनुरूप अपने को ढालें तो ही उत्तम ज्ञान का दान संभव है ।

१०४, शिप्रा अपार्टमेन्ट
दूरभाष : ०१२०२७७३४००
०९७१८५२८०६८
कौशाम्बी-२०१०१
गाजियाबाद, भारत

तपोमूर्ति डॉ० स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी का अमृत महोत्सव

आर्य जगत् को यह जानकर अपार हर्ष होगा कि पातञ्जल योगधाम, आर्यनगर (ज्वालापुर) हरिद्वार के संचालक डॉ० स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, डी० लिट् का उनके जीवन के पचहत्तर वर्ष पूर्ण होने पर १६ नवम्बर २०१४ को अमृत महोत्सव आयोजित करने का निर्णय लिया गया है । इस अवसर पर उनके सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित होगा, जिसका सम्पादन डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालंकार और डॉ० सुरेन्द्र सिंह कादियाण मिलकर कर रहे हैं ।

यह ज्ञातव्य है कि स्वामी जी का समूचा जीवन आर्य समाज को समर्पित रहा है । देश-विदेश में वेद प्रचार, समाज सुधार, अध्यात्म, यज्ञ, योग की ज्योति को देश-विदेश में प्रज्वलित रखने में उनका अहर्निश योगदान रहा है । जिस निष्ठा, मनोयोग, समर्पण व निष्काम भावना से उन्होंने आर्य समाज के मिशन को अपने योग-शिविरों, गोष्ठियाँ, प्रवचनों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आगे बढ़ाया है वह अपने आप में विरल प्रयास है । अतः समाज उनकी प्रशस्त सेवाओं से अनृण हो और भावी पीढ़ी उनके आदर्श चरित्र से प्रेरणा ले इस निमित्त से उनका अमृतोत्सव एवं अभिनन्दन आर्य समाज के इतिहास में मील का पत्थर सिद्ध होगा ।

स्वामी जी से परिचित महानुभावों से हमारी प्रार्थना रहेगी कि अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ अपने संस्मरणात्मक लेख व कविताएँ यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करें । यह सामग्री अभिनन्दन समिति के शाखा कार्यालय में डॉ० सुरेन्द्र सिंह कादियाण, सम्पादक, अभिनन्दन ग्रन्थ के पास भिजवायें ।

-: निवेदक :-

स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष
९०१३७८३१०१

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री
उपाध्यक्ष
९८६८८५५१५५

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
स्वागताध्यक्ष

मुकेश मेधार्थी
९८९७८०४१३३

माया प्रकाश त्यागी
स्वागत मन्त्री
९८७३५४०५०८

माता सुषमायति
संयोजक
९८६८५६७०७८

महेन्द्र भाई
सह-कोषाध्यक्ष
९०१३१३७०७०

वैद्य इन्द्र देव
प्रचार मन्त्री
९८६८११९११५

thearyasamaj.org

२०१४ के चुनाव में आर्यसमाज का स्थान

प्रो० डॉ० चंद्रशेखर लोखंडे (रेणापूर)

जब व्यक्ति ही संस्था बन जाता है तो समाज में आमूलचूल परिवर्तन आ जाता है, यही बात नरेन्द्र मोदी के सन्दर्भ में समुचित बैठती है । भाजपा २००४ के चुनाव में फिर से सत्ता में आने के लिए लालायित थी, लेकिन इंडिया शायनिंग की चकाचौंध में और २००९ में लालकृष्ण आडवाणी अगुवाई में पार्टी चुनाव हार गई । अतः नेतृत्व और नियोजन के अभाव में जनता ने उसे धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया । उसके बाद २०१४ के चुनाव में व्यक्तित्व और नेतृत्व परिवर्तित कर भाजपा ने भारतीय राजनीति में आजमाईश करने का निश्चय किया । गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह चुनाव लड़ा गया और उसे अनपेक्षित विजय प्राप्त हुई । इस चुनाव में अन्य कई फैक्टर भी काम आये जैसे गुजरात मॉडल, प्रभावी वक्तृत्व, नेतृत्व, कॉंग्रेस विरोधी लहर, तथा भ्रष्टाचार के मुद्दे जो भाजपा को चुनाव जिताने में सहायक सिद्ध हुये। मोदी जी ने 'सबका साथ सबका विकास' इस घोषणा को साथ लेकर बहुसंख्यक हिन्दू समाज को संगठित करने का सफल प्रयोग किया । कलियुग में संगठन में शक्ति है यह कहा जाता है और लोकतंत्र के लिए यह आवश्यक भी है । हिन्दू समाज के विघटन दोष के कारण कॉंग्रेस साठ सालों से सत्ता पर काबिज़ रही थी, और बहुसंख्य समाज भी गाँधी नेहरू परिवार के अलावा कुछ सोच भी नहीं सकता था, लेकिन २०१४ के चुनाव से यह बात तो साबित हो गयी कि सारी बातें यदि जुड़कर आ जाती हैं तो देश की दिशा बदल सकती है ।

आर्यसमाजियों का यह मानना कि हिन्दू समाज कभी संगठित नहीं हो सकता, क्योंकि वह देवी देवताओं, आस्थाओं, मतमतान्तरों में बिखरा हुआ असंगठित समाज है, गलत सिद्ध हुआ । श्री नरेन्द्र मोदी ने समाजशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों के इस दावे को असत्य सिद्ध कर दिया कि हिन्दू समाज कभी एक नहीं हो सकता । कॉंग्रेस अल्पसंख्यक मुस्लिम, दलितों और कुछ धर्मनिरपेक्षवादियों के सहयोग से और हिन्दू-मुस्लिमों को आपस में लड़वाकर सत्ता हासिल कर लेती थी । यह सिलसिला साठ वर्षों से (कुछ वर्षों के अपवाद को छोड़कर) चला आ रहा था । कॉंग्रेस को यह लगता था कि चुनाव आने पर धर्मनिरपेक्षता की बीन बजाओ और हिन्दू समाज रूपी विशाल नागराज को वश कर लो और सत्ता हथियाते रहो, लेकिन इस बार मोदी रूपी ऐसा संपेरा आया कि जिसने विकास की और अच्छे दिनों की ऐसी बीन बजाई कि सम्पूर्ण हिन्दसमाज संगठित हो गया और ६० सालों से सत्ता पर आसीन कॉंग्रेस को सिंहासन से उतार कर जमीन पर लाकर खड़ा कर दिया ।

कॉंग्रेस को लगता था कि थोड़ी बहुत हिन्दू जनता भाजपा के साथ जा सकती है लेकिन एक तिहाई हिन्दू जनता कॉंग्रेस को ही मतदान करेगी । बहुत सारे विश्लेषकों का भी मत इसी प्रकार का था कि सवर्ण हिन्दू को छोड़कर बाकी सभी वर्ग, जाति, कॉंग्रेस के पलड़े में वोट डालेगी, लेकिन सभी का अन्दाज गलत निकला ।

thearyasamaj.org

आर्यसमाज की इस चुनाव में कोई बड़ी भूमिका नहीं रही । लेकिन अन्य सभी सामाजिक संगठनों, हिन्दूवादी संस्थाओं का इस चुनाव में भारी योगदान दिखाई दिया । स्वयं स्वामी रामदेव ने अपने हजारों कार्यकर्ताओं को साथ लेकर भाजपा को चुनाव जिताने में सहयोग किया । हाँ, इतना जरूर था कि व्यक्तिगत रूप से अथवा अन्य हिन्दूवादी संगठनों के साथ मिलकर आर्यों ने भाजपा की जिताने में सहयोग दिया हो लेकिन संस्थागत रूप से आर्य समाज इस चुनाव में अलिप्त रहा ।

प्रश्न यह उपस्थित होता है कि क्या आर्यसमाज इस तरह के राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्यों के प्रति कब तक उदासीन बनकर रहेगा या स्वयं को अलिप्त रखेगा ?

हिन्दू समाज भले ही सामाजिक तौर पर बिखरा हुआ हो लेकिन इस बार काँग्रेस को सत्ता से उखाड़ फेंकने के लिए उसने एकजुट एवं मजबूत होकर भाजपा की झोली में अभूतपूर्व मतदान किया।

इस चुनाव में विकास का मुद्दा भी हावी था इसे नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता, लेकिन अल्पसंख्यक तुष्टीकरण, आतंकवाद, सीमा पर पाकिस्तान की घुसपैठ और वोट बैंक की राजनीति से हिन्दू जनमानस खौल उठा था, उसने काँग्रेस की एकांगी तुष्टीकरण नीति के विरुद्ध उसे सबक सिखाने की ठान ली थी ।

परिणाम यह हुआ कि सदा सर्वदा सत्ता में रही काँग्रेस पार्टी केवल ४४ सीटों पर सिमट कर रह गयी । उसको संसदीय विरोधी पार्टी नेता का पद भी हासिल न हो सका । इस तरह हिन्दुत्व संगठित एवं मजबूत होकर भारतीय राजनीति में उभर कर आया । आर्य कार्यकर्ताओं, समाजसेवियों, पदाधिकारियों और आर्यसमाजियों को समझ लेना होगा कि जो जिसकी उपेक्षा करता है, वह (समाज) उसे हाशिए पर डाल देता है । अतः धर्म, अध्यात्म, शास्त्र, उपासना आदि का प्रचार करते हुए भी राष्ट्रीय सामाजिक आन्दोलनों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेना अपरिहार्य है, अन्यथा प्रवाह से बाहर फेंक दिये जाओगे । यह संदेश इस चुनाव के माध्यम से जनता ने आर्यसमाज को दिया है । महाराष्ट्र के आध्यात्मिक गुरु समर्थ रामदास ने मुगलों के विरुद्ध महाराष्ट्र के वीर शिरोमणि शिवाजी और मराठा लड़ाऊ कौम को अपनी प्रखर वाणी से जागृत और संगठित कर औरंगजेब को दक्षिण में पांव रखने नहीं दिये थे । इस बात को फिर से स्मरण करानां मात्र उद्देश्य है ।

अध्यक्ष,

'संस्कृति रक्षक मंच'

सीताराम नगर, लातूर

पिन-४१२५३१ (महाराष्ट्र)

मो० : ०९९२२२५५५९७

—०—

thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

पितृपक्ष–श्राद्ध तर्पण

–पं० वेदभानु

प्राचीनकाल से मनुष्य अपने माता-पिता के प्रति श्रद्धा-भक्ति, सेवा-सुश्रुषा, सत्कार सम्मान आदि करते आ रहे हैं । अपने पूज्य माता-पिता, गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भक्ति, सेवा सत्कार, सम्मान करना भी चाहिए । माता पिता, गुरुजनों की सेवा भक्ति आदि करने का फल महर्षि मनु जी अपने मनुस्मृति ग्रन्थ में लिखते हैं—**अभिवादन शीलस्य नित्यं बृद्धोपसेविन:। चत्वारि तस्य बर्धन्त आयुर्विद्या यथोबलम् ।** जो मनुष्य अपने माता-पिता, गुरुजनों की सेवा, सत्कार, सम्मान आदि करते हैं । वे मनुष्य आयु, विद्या, बल और यश ये चार वस्तु प्राप्त करते हैं और जो व्यक्ति माता पिता गुरुजनों की सेवा सत्कार, सम्मान आदि नहीं करते ऐसे व्यक्ति की आयु, विद्या, बल, यश घट जाते हैं या नष्ट हो जाते हैं । माता-पिता गुरुजनों के आशीर्वाद से मनुष्य महान से महान बन जाता है, उसकी यश कीर्ति चारों दिशाओं में फैलती है । हमारे शास्त्रों में माता पिता और गुरु को देवता कहा गया है । **मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव-माता पिता आचार्य (गुरु)** ये तीन देव हैं ।

हमारे जीवन के निर्माण में माता-पिता और गुरु इन तीनों का अपना एक अलग स्थान है। इसलिए हम इन तीनों के प्रति ऋणी हैं । इनके ऋणों से हम कभी उऋण नहीं हो सकते । फिर भी उत्तमोत्तम भोजन-छादन, वस्त्र आदि से माता पिता गुरुजनों को सदा तृप्त करते रहना यह हमारा कर्तव्य है इसी का नाम है तर्पण । जिससे माता पिता तृप्त हों इसे **तर्पण** कहते हैं और जो श्रद्धापूर्वक किया जाय वह है **श्राद्ध** । श्राद्ध और तर्पण जीवित अवस्था में सम्भव है, मृत्योपरान्त श्राद्ध और तर्पण करना संभव नहीं है और न वैदिक वांगमय ग्रन्थों में कहीं प्रमाण है । प्रचलित एक वाक्य है – जीते जी दङ्गमदङ्गा; मर गये ले गया गंगा । जीवित अवस्था में माता-पिता की सेवा नहीं किया, माँ बाप से लड़ते रहे और मरने के बाद गंगा में जाते हैं पानी पिलाने के लिए । क्या यह वास्तविक श्राद्ध और तर्पण है, विचार करना चाहिए । हम केवल देखादेखी भेड़चाल की भाँति **बाबा वाक्यं प्रमाणम्** किसी ने कह दिया और हमने बिना विचार किये करना शुरू कर दिया । देखा देखी एक अंध परम्परा चल पड़ी है । कब यह अंध परम्परा समाप्त होगी। बहुत सारे परिवार हैं जो पुत्र माता पिता से पृथक है – किसी को बात करने की फुरसत नहीं है, कितने माता-पिता भोजन पानी के लिए तरसते हैं । असमर्थ वृद्ध माता-पिता को क्या चाहिए केवल दो समय भोजन-पानी और सामान्य वस्त्र, औषध इत्यादि । वृद्ध माता पिता को वृद्धाश्रम में लाखों रुपया देकर भेज देते हैं। आज शिक्षित समाज में विचार करने की आवश्यकता है क्या हम श्राद्ध के नाम पर सही कर रहे हैं या गलत ।

thearyasamaj.org

विचारणीय बिन्दु

१. आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से अमावस्या तक केवल १५ दिन का समय पितृपक्ष को माना है । क्या वर्ष में हमारे पितरगण इसी दिन में ही भोजन करके तृप्त होते हैं ? बाकी ३५० दिन क्या भूख प्यास नहीं लगती है ? यदि भूख प्यास लगती है तो इतने दिन कहाँ और किनके द्वारा भोजन करते हैं ?

२. शरीर और आत्मा एक साथ रहते हुए पृथक-पृथक सत्ता है । आत्मा विहीन शरीर अकेला भोजन नहीं कर सकता और न केवल आत्मा अलग भोजन कर सकती है । शरीर आत्मा के संयुक्त अवस्था में ही शरीर को भूख प्यास लगती हैं इसलिए भोज्य सामग्री की आवश्यकता होती है । क्या हम पितृपक्ष में भोज्य सामग्री आत्मा को देते हैं या शरीर को ? मृत्योपरान्त शरीर को हम ने भस्म कर दिया । आत्मा ने अपने कर्मानुसार, प्रभु व्यवस्था से जिस शरीर को प्राप्त किया वहाँ पर ईश्वरीय व्यवस्थानुसार सबकुछ प्राप्त होते हैं जिससे उनका जीवन चलता रहता है ।

३. मृत्यु के पश्चात् प्रत्येक जीवात्मा अपने किये हुये कर्मानुसार मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट पतंगादि भिन्न-भिन्न शरीर को प्राप्त होता है । किस शरीर को प्राप्त किया, किस स्थान में है, इसका पूर्वाभास, जानकारी उनके परिवार में किसी के पास नहीं है । यदि पूर्वाभास होता तो निर्दिष्ट स्थान पर जाकर भोज्य सामग्री एवं अन्य आवश्यक वस्तु की भी समुचित व्यवस्था कर सकते हैं ।

४. **'पा रक्षणे पा पालने'** धातु से पितृ शब्द बनता है जिसका रूप चलता है पिता-पितरौ-पितरः। पितर शब्द बहुवचनान्त होने से जो हमारे रक्षक और पालक हैं वे सभी पितर कहलाते हैं । पितर का वाचक है माता, पिता, गुरु, आचार्य, राजा, ज्ञानी ये सभी हमारे रक्षक और पालक है इसलिए शास्त्रों में ये सभी पितर होते हैं । मृत्योपरान्त आत्मा की पितर संज्ञा नहीं होती है।

आइए हम सभी जीवित माता-पिता, आचार्य गुरुजनों की यथोचित सेवा सत्कार सम्मानादि करके सही श्राद्ध और तर्पण करने का संकल्प लें । मृत्योपरान्त इनके किये हुये उपकारों को सदा याद करें एवं उनके बताये हुए मार्ग पर चलें यही श्राद्ध एवं तर्पण है ।

माता पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रणमत बारंबार ।
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया बड़ा उपकार ॥

आर्य समाज हावड़ा
३८/३, क्षेत्र मित्र लेन, सलकिया
हावड़ा-६, फोन - २६६५-३११५

thearyasamaj.org

आस्था के दलदल में

श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य, मुजफ्फरपुर

आज लोगों को जिस नाम पर सबसे ज्यादा ब्लैकमेल किया जाता है वो नाम है भगवान का और अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रायः सभी धर्माधिकारियों ने अपने-अपने धर्मावलम्बियों को इस बात की सख्त हिदायत दे रखी है कि धर्म और ईश्वर के विषय में बुद्धि का प्रयोग सर्वथा वर्जित है, यह पूरी तरह से आस्था का विषय है । यही कारण है कि लोग ईश्वर के विषय में बताई गई तमाम बातें ठीक उसी तरह मान लेते हैं जिस प्रकार उन्हें बताया गया है और एक बार जब बिना जाने हुए सब मान लेते हैं तब फिर कुछ जानना भी नहीं चाहते । सिर्फ वैदिक धर्म में ही जिसका आधार वेद है में किसी बात को तर्क और प्रमाण की कसौटी पर कसकर बुद्धिमता पूर्वक विचार कर मानने का निर्देश है । यदि आस्था के नाम पर व्यक्ति को यह स्वतंत्रता है कि वो जो चाहे माने तो आस्था के नाम पर ही ईश्वर को खुश करने वास्ते बलि और नरबलि देना गलत कैसे ? इसे मात्र एक उदाहरण से समझा जा सकता है :—

इसे बहुत कम लोग जानते होंगे पर विज्ञान के अनुसार सूर्य का आकार पृथ्वी के आकार से १३ लाख गुणा बड़ा है अर्थात् १३ लाख पृथ्वी को मिलाकर एक सूर्य का आकार बनता है, और सूर्य की दूरी पृथ्वी से ९ करोड़ माइल है । इतना ही नहीं सूर्य एक जलता हुआ आग का गोला है और सूर्य की ऊर्जा का मात्र २ अरबवाँ भाग ही पृथ्वी तक पहुँचता है । अगर सूर्य की सम्पूर्ण ऊर्जा पृथ्वी तक पहुँच जाय तो सबकुछ जलकर भस्म हो जायेगा । कुछ भी नहीं बचेगा । मगर इसी सूर्य के विषय में तुलसी दास ने लिख दिया कि सूर्य को हनुमान जी निगल गये । यह बात किसी के बुद्धि में समाहित नहीं हो सकता, फिर भी लोग इसे सत्य मानते इसलिए हैं कि रामचरित मानस के रचयिता और इतने बड़े रामभक्त भला गलत कैसे लिख सकते हैं । तो यह है अन्ध आस्था का प्रमाण ।

अभी अभी साई पूजा को लेकर शंकराचार्य और साई भक्तों के बीच बड़ी बहस छिड़ गई है जो कि एक बवंडर का रूप लेता जा रहा है हालांकि इसका कोई सार्थक परिणाम निकलने वाला नहीं है क्योंकि दोनों ही वेद विरुद्ध हैं, फिर भी हम चाहते हैं कि यह बहस किसी निर्णायक परिणति तक पहुँचे ताकि सत्य का अनावरण हो सके । शंकराचार्य का साई बाबा पर सबसे बड़ा आरोप यह है कि हिन्दू धर्म में मात्र २४ अवतारों का ही उल्लेख है तो फिर पच्चीसवां अवतार के रूप में साई बाबा कैसे ? तो इस सम्बन्ध में हमारा यह कहना है कि हिन्दू धर्म के शास्त्रों में जब मात्र २४ अवतारों का ही उल्लेख है तो हम यह जानना चाहते है कि हिन्दू धर्म के किस शास्त्र में हिन्दू शब्द का उल्लेख है और अगर नहीं है तो हम हिन्दू क्यों है वो क्यों नहीं जिसके नाम पर इस देश का पुरातन नाम आर्यावर्त रहा है । शंकराचार्य का दूसरा आरोप है कि साई पूजा के नाम पर हिन्दू धर्म को बांटने का षडयंत्र है ।

thearyasamaj.org

तो इस सम्बन्ध में हमारा कहना है कि हिन्दू धर्म तो पहले ही से अनेकों टुकड़ों में विभक्त है और जिस एक शब्द के वजह से हिन्दू धर्म अनेकों टुकड़ों में बंटा हुआ है वो शब्द है अवतार और जब तक यह शब्द अवतार विद्यमान रहेगा तब तक हिन्दुओं में एकता कभी भी स्थापित नहीं होगा और आगे भी अवतार होता रहेगा तथा हिन्दू बँटते रहेंगे । अनुयायियों की तो बात छोड़िए हमारे धर्माचार्य सब भी अनेक टुकड़े में बंटे हुए है ।

आज ही टी०वी० पर धर्माचार्यो की जो बड़ी बहस देखने को मिल रहा है, उससे भी पता चलता है कि धर्माचार्यो में भी कितना विघटन है, इसे देखकर यह आश्चर्य होता है किसी भी धर्माचार्य को ईश्वरीय ज्ञान वेद से पूछने की जरूरत नहीं है कि आखिर वेद क्या कहता है जिसे मनुस्मृति ने लिखा है — **वेदोंऽखिलें धर्म मूलम्** अर्थात् वेद ही धर्म का मूल है । तो थोड़ा वेद से पूछकर देखे कि ईश्वर कौन है ? उसके क्या सब गुण ह और वह क्या करता है । तो वेद के अनुसार :—

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वाअन्र्तयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है तो ये सब ईश्वर के गुण हैं इसीलिए एकमात्र उसी की उपासना करनी चाहिए।

३. ईश्वर चूंकि अजन्मा है इसलिए मरण भी नहीं होता है । ८ अरब ३२ करोड़ वर्ष का सृष्टि काल होता है इतना ही प्रलय काल होता है तो ईश्वर वो है जो सृष्टिकाल के पहले भी विद्यमान था और प्रलयकाल के बाद भी विद्यमान रहेगा । अवतार तो हम सभी का होता है, ईश्वर का नहीं । वह आने जाने वालों में नहीं है क्योंकि वह तो कर्मकाल दाता है, कर्मफल भोक्ता नहीं । ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन अनादि सत्तायें है । अवतार महान आत्माओं का होता है, दिव्य आत्माओं का होता है परम आत्मा का नहीं ।

ईश्वर कभी मरता नहीं, क्यां लेवे अवतार ।
जीव शरीर धारण करें, अपने क़र्मानुसार ।।

दुर्भाग्य है हिन्दू समाज का जिसने वेदों को लाल कपड़े में बाँध कर रख दिया है और सिर्फ नाम भर लेते है । हमारे धर्माचार्य भी वेदों से इतना दूर क्यों हैं ? इसके दो कारण हैं प्रथम तो यह कि वेदों तक उनकी पहुँच नहीं है और दूसरा यह है कि अगर वेदों तक उनकी पहुँच भी है तो उनमें वेदों के पन्ने को पलटने का साहस नहीं क्योंकि इसके बाद ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, आडम्बर एवं अन्धविश्वास को फैलाया नहीं जा सकता, उनका धर्म का व्यापार ही ठप पड़ जायेगा । वेदों के इस मंत्र का किसी के पास क्या जवाब है — न तस्य प्रतिमा अस्ति यसस्य नाम महाशयं अर्थात् ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं हो सकता क्योंकि उस महान यश वाले ईश्वर का कोई आकार नहीं है । इसलिए इन धर्माचार्यो का बहस ही निराधार एवं वेद विरुद्ध है ।

thearyasamaj.org

निःसंदेह साई बाबा एक उच्चकोटि के साधक थे जो सच्चे अर्थो में ईश्वर के भक्त थे । उनका कहना था कि सबका मालिक एक है तो क्या यह उन्होंने अपने बारे में कहा था, तो उनके भक्तजन उनकी भक्ति में क्यों नहीं लगते जिनके बारे में उन्होंने कहा था हांलाकि यह कोई नई बात नहीं, वेद ने भी बहुत पहले ही कहा है कि **एको विश्वस्य भुवनस्य राजा** अर्थात् सम्पूर्ण भूमंडल का स्वामी एक है । तो साई बाबा के पहले भी ईश्वर था और साई बाबा के बाद भी ईश्वर रहेगा । अतः उनकी उपासना में सब लगे ।

अगर धर्माचार्यो को बहस ही करनी है तो सारे धर्माचार्य मिल बैठकर इन समस्याओं का कारण और निराकरण खोजें कि आखिर क्यों ?

१. दुनियां में सारे मुसलमान लगभग एक हैं, सारे ईसाई एक हैं, सारे बौद्ध एक हैं, सारे पारसी एक हैं तो फिर हिन्दू एक क्यों नहीं ? यहाँ तक कि उनके मस्जिद एक है, गिरिजा घर एक हैं, बौद्ध मठ एक हैं तो हमारे मन्दिर एक क्यों नहीं ।

२. सारी दुनियां को एकेश्वरवाद का संदेश देने वाली आर्यजाति आज खुद क्यों बहुदेवतावाद के दलदल में फँस गई है ।

३. कभी दुनियां में केवल आर्य धर्म था और आर्य धर्म से ही सभी उत्पन्न हुए फिर आज हम क्यों विश्व समुदाय के सामने अल्पसंख्यक हैं ।

४. पूरी दुनिया में केवल सनातन वैदिक धर्म ही धर्म है बाकी सभी मत पंथ एवं सम्प्रदाय हैं क्योंकि उन मतों के कोई न कोई प्रवर्तक है पर क्यों कोई बता सकता है कि आर्यधर्म के प्रणेता कौन है फिर भी हमारी स्थिति ऐसी कैसे बन गई कि हम विनाश के कगार पर आ गए ।

५. आज भारत दुनियां में गो मांस का निर्यातक एक प्रमुख देश बन गया है जिस वजह से अमृत समान दूध देने वाली गायों की हत्या प्रतिवर्ष एक करोड़ की हो गई है ।

६. आज पूरे देश में हत्या, लूट, बलात्कार और अपहरण का बाजार गर्म है और मांस और शराब का भयंकर सेवन हो रहा है, जिस वजह से पूरे समाज में अपराध का बोलबाला है ।

७. आज इस देश में बेजान नारी मूर्तियों की तो पूजा हो रही है पर जीवन्त नारी को भोग की वस्तु के अलावा कुछ नहीं समझा जाता और रोमांस अपने चरम सीमा रेप टिल डेथ तक पहुंच गया है ।

अतः हम सभी धर्माचार्यो से मार्मिक अपील करते हैं कि मनुष्य को मनुष्य ही रहने दीजिए उसे भगवान मत बनाइये और समाज को ढोंग आडम्बर, पाखण्ड और अंधविश्वास में मत ढकेलिये । आप सब नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण के कार्य को अपने हाथ में लेकर देश को सबल बनावें ।

आर्य समाज मुजफ्फरपुर

सम्पादकीय टिप्पणी – उपरोक्त लेखक के स्वतन्त्र विचार हैं । पाठकों की प्रतिक्रिया का स्वागत है ।

—o—

thearyasamaj.org

(शेषांश कवर पृष्ठ २ का)

धर्म नामक दैनिक पत्र निकाला गया । इतिहास लेखक स्वीकार करते हैं कि यह सब उचित-अनुचित का विचार किये बिना केवल विरोध की दृष्टि से किया जा रहा था । इस विषम परिस्थिति में सनातन धर्म पत्र के मोर्चे पर आर्यसमाज की ओर से **'सत्य सनातन धर्म'** नामक पत्र निकाला गया और इस पत्र का सम्पादन श्री राधामोहन गोकुलजी ने किया ।

तात्कालिक विरोध-भावना तथा सनातन धर्म और सत्य सनातन धर्म के सम्बन्ध में हम इसी इतिहास के तत्सम्बन्धी प्रसंगों पर विचार व्यक्त करेंगे । यहाँ हमारा इतना ही अभिप्राय है कि आवश्यकता पड़ने पर श्री राधामोहन गोकुलजी ने इस प्रकार के बवण्डर का बड़ा सशक्त और समर्थ विरोध किया था ।

यह समय आर्यसमाज में पं० शंकरनाथजी, सम्पादकाचार्य पं० रुद्रदत्तजी जैसे विद्वानों का युग था । सम्भव है कि जैसे सनातन धर्म की ओर से सनातन धर्म पत्र तो निकला, किन्तु किसी सनातन धर्मी संस्था ने उसे नहीं निकाला था । उसी प्रकार आर्य समाज की ओर से भी सम्भव है संस्था का सामने आना उचित न समझा गया हो । तथापि किसी-न-किसी को यह तूफानी आक्रमण श्री जयनारायणजी की ओर से और वैदिक सिद्धान्तों की ओर से डटकर झेलना आवश्यक हो गया था । यह कार्य श्री राधामोहन गोकुलजी ने बड़ी समर्थता से किया और तथाकथित आक्षेप करने वालों की बोलती बन्द हो गयी ।

बवण्डर का शान्त होना एक बात थी किन्तु पं० ज्वालाप्रसादजी और पं० भीमसेनजी जैसे दर्जनों विद्वानों का महीनों जमकर बैठ जाना और विरोध की उग्रता का स्वरूप दैनिक पत्रों के प्रकाशन के रूप में उभर आना, फिर वैदिक सिद्धान्तों की ओर से राधामोहन गोकुल का सम्मुखीन होना अपने में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अध्याय है । आज आर्यसमाज और सनातन धर्म एक ही विशाल वैदिक धर्म के रथ के दो सहयोगी पहियों के रूप में दिखायी पड़ रहे हैं, किन्तु विरोध के दिन तो थे ही विरोध के दिन, और इस दृष्टि से श्री राधामोहन गोकुलजी की सशक्तता, क्षमता, निष्ठा, धीरता इतिहास की दृष्टि से अपने में बेजोड़ हैं । साहित्यिक व्यक्ति तो वे थे ही, कई पुस्तकें उन्होंने लिखी ही हैं । अनुमान होता है कि उनकी सम्पादनकला भी गौरवमयी रही होगी ।

इतिहास के विभिन्न सूत्रों से यह विदित होता है कि अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने श्री राधामोहन जी की स्मृति में समाज-सुधार सम्बन्धी उत्कृष्ट ग्रन्थ पर **'राधामोहन गोकुल पुरस्कार'** देना आरम्भ किया । यह पुरस्कार श्री राधामोहन जी की हिन्दी-सेवा को भी उजागर करता है ।

श्री राधामोहन गोकुल जी कलकत्ता से हमीरपुर चले गये । वहाँ स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा स्थापित विद्यालय में रहने लगे । सन् १९३५ ई० में कलकत्ता से हमीरपुर जाकर स्वतन्त्रता-संघर्ष और क्रान्तिकारी दल का संगठन करते रहे । वहीं जीवन के अन्तिम दिनों तक आप रहे और जैसा नि:स्वार्थ क्रान्तिकारी सेवकों के साथ प्राय: होता ही है, जीवन के अन्तिम दिनों में औषधि-उपचार का भी ठीक योग न बन पाया । श्री राधामोहन जी पेचिश के शिकार हुए और वहीं आपका देहान्त हो गया । **'राधामोहन गोकुल पुरस्कार'** उनकी साहित्यिक सेवाओं का अमर स्मारक है ।

(आर्य समाज कलकत्ता के शतवर्षीय इतिहास से)

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

आर्य समाज कलकत्ता का १२९वाँ वार्षिकोत्सव शनिवार २० दिसम्बर से रविवार २८ दिसम्बर २०१४ पर्यन्त हृषीकेष पार्क, आम्हर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता-९ में मनाया जायेगा । इस अवसर पर आर्य जगत् शिरोमणि मूर्धन्य विद्वान् आचार्य डॉ० धर्मवीर जी (अजमेर), डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार तथा भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी पधार रहे हैं ।

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए पं० उमाकान्त उपाध्याय, एम०ए० द्वारा प्रकाशित
तथा एशोसियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३